

इंजीनियरिंग एवं प्रबंधन में
अध्ययन कर रहे शोधकर्ता वेद
नारायण रंजन और अनुजा जोषी
प्रकाश कि 15 मिनट के भीतर
यह सूक्ष्म प्लास्टिक को प्रति पाम
पिपि या अन्य पेय की प्रतिक्रिया में
रूपांतरित नहीं। प्रोफ़ेसर सुधा
गोयेल ने कहा, 'हमारे अध्ययन के
अनुसार एक पेपर कप में रखा
100 मिलीलीटर कम तरल पदार्थ
25,000 माइक्रोन-आकार (10
माइक्रोन से 1000 माइक्रोन) के
सूक्ष्म प्लास्टिक के कण छोड़ता है
और यह प्रक्रिया कुल 15 मिनट
में पूरी हो जाती है।



नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर अभिषेक बच्चन की तुलना अक्सर उनके पिता अमिताभ बच्चन से होती है। साल 2000 में फिल्म रिफ्यूजी से अपने करियर की शुरुआत करने वाले अभिषेक बच्चन का मानना है कि अगर ऑडियंस आपके काम को स्वीकार नहीं करती है तो आप इंडस्ट्री में सर्वाइव नहीं कर सकते हैं। इसके साथ ही उन्होंने नेपोटिज्म को लेकर कहा कि उनके पिता ने कभी भी उनके लिए किसी से सिफारिश नहीं की है। एक इंटरव्यू के दौरान अभिषेक ने कहा, 'फैक्ट यह है कि उन्होंने (पिता अमिताभ बच्चन) कभी किसी को कॉल नहीं किया। उन्होंने कभी भी मेरे लिए फिल्म नहीं बनाई। इसके विपरीत मैंने उनके लिए फिल्म पा को प्रोड्यूस किया था।' उन्होंने आगे कहा कि लोगों को यह समझना होगा कि यह एक बिजनेस है। पहली फिल्म के बाद अगर उन्हें आपके अंदर कुछ नहीं दिखता है या फिर फिल्म अच्छा परफॉर्म नहीं करती है तो आपको काम नहीं मिलेगा। यही जीवन की कड़वी सच्चाई है।

अभिषेक ने आगे कहा कि जब मेरी फिल्म में नहीं चलती है तो मुझे पता होता है, मैं जानता हूँ कि मुझे कई फिल्मों में रिलेस किया गया। कई फिल्में नहीं बन सकीं। कई शुरु हुई लेकिन बजट के कारण नहीं बन पाई क्योंकि उस वक़्त मैं बैंकबल नहीं था।

नई दिल्ली। अमेजन प्राइम की पॉप्युलर वेब सीरीज मिर्जापुर का दूसरा सीजन हाल ही में रिलीज हुआ, जिसे फैंस से जबरदस्त रियासत मिली। सीरीज में दिव्यंशु शर्मा, अनी फाजल, पंकज त्रिपाठी और, चेतना त्रिपाठी के काम की काफी बहुत पसंद किया गया। हालांकि, सीरीज के अंत में मुन्ना त्रिपाठी की मौत हो जाती है, जिसका रोल दिव्यंशु शर्मा ने निभाया है। अब दिव्यंशु ने बताया कि मिर्जापुर 3 में मुन्ना भैया की किस तरह वापसी हो सकती है। बॉलीवुड हंगामा के साथ टि्वटर के दौरान दिव्यंशु शर्मा से पूछा जाता है कि क्या मिर्जापुर 3 में मुन्ना के वापस लौटने की कोई संभावना है?



नई दिल्ली। भारत में शादीशुदा महिलाओं के लिए करवा चौथ का त्योहार शुरू बहुत मायने रखता है। इसी का बेहतरीन उदाहरण दिखाया है बॉलीवुड की अभिनेत्री प्रीति जिंटा ने। प्रीति ने दुबई से लॉस एंजेलिस तक की लंबी यात्रा जीनी के बाद पति जेन गुडपन्थ के साथ करवा चौथ सेलिब्रेट किया। प्रीति ने इस दौरान की फोटो अपने इंस्टाग्राम पर शेयर की है। लाल रंग की ड्रेस में हैवी जूलरी के साथ प्रीति, जेन के साथ खूब दिख रही हैं।

प्रीति ने फोटो शेयर कर लिखा, 'उन सभी को शुभकामनाएं जिनके लिए जिन्होंने करवाचौथ मनाया। मेरे लिए ये सबसे लंबा था'।

शुरू किया दुबई में, बादलों के बीच से होते हुए एल.ए. में लैंड किया। ये सब कुछ बनता था क्योंकि अंत में मुझे अपने पति परमेश्वर देखने को मिल गए। मैं मुझे आपको बहुत प्यार करती हूँ'।

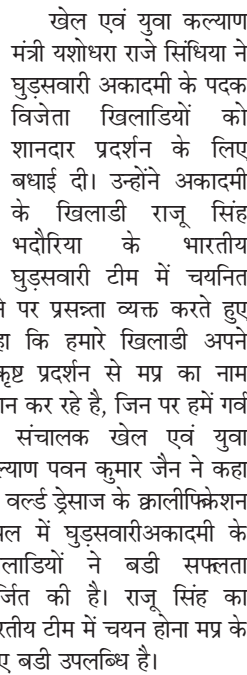
प्यार। सहैप्रीत करवाचौथ सतिपरमेश्वरसटिंग। इस पर प्रियंका चोपड़ा ने एक दिल वाली आंखों वाला इमोजी बनाया। प्रीति के फैन्स ने भी उन्हें खूब सराहा। फैन ने -लिखाक्यों लव यू। यू लुक परफेक्ट। एक अन्य फैन ने लिखा यू लुक क्यूटेस्ट। आपको बता दें प्रीति जिंटा किंग्स इलेवन पंजाब की को-ओनर हैं। इस समय आईपीएल के मैच चल रहे हैं जिनकी वजह से प्रीति दुबई के बीच

नई दिल्ली। अभी भी देश के कई हिस्सों में प्याज की खुदरा कीमतें 80-100 रुपये प्रति किलोग्राम तक हैं। हालाँकि, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान और अन्य राज्यों से रबी (सर्दी) के पुराने स्टॉक और खरीफ (गर्मी) के नए स्टॉक की आवक से प्याज की कीमतें बढ़ती कीमतों पर लगाम लगा है और आने वाले दिनों में प्याज की कीमतों और कम होंगी। इसके लिए सरकार ने उपाय तेज कर दिए हैं। इसी कड़ी में सहकारी संस्थान नेफेड ने शुक्रवार को कहा कि उसने 15,000 टन आयातित प्याज की आपूर्ति के लिए आदेशशुल्क जारी किए हैं और इस संबंध में बोलोदाताओं को अंतिम रूप दे दिया गया है। नेफेड ने कहा कि इससे घरेलू बाजार में उपलब्धता बढ़ेगी और कीमतों काबू में रहेगी। नेफेड ने आगे कहा कि आयातित प्याज बंदरगाह शहरों से निर्यातित किया जाएगा, इसलिए तेजी से आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकारों से पूछा गया है।

अपरिवर्तित रहा। चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 84.14 रुपये प्रति लीटर और डीजल 75.99 रुपये प्रति लीटर पर टिकी रही।

महत्वपूर्ण है। अभी भी बहुत देर नहीं हुई है और हम मजबूती के साथ वापसी करेंगे। हर रात आपका नहीं हो सकता। हम मिलने वाले अवसरों को लेकर बातचीत करते रहते हैं। अच्छा खेलने के लिए अच्छी मानसिकता का होना महत्वपूर्ण है।

दिल्ली के लिए डूबे हार के बाद पहली बार फरज़नल में जगह बनाती की उम्मीद प्रगती समाप्त नहीं हुई है। दिल्ली आठ नवम्बर को होने वाले दूसरे कालीफ़्पार में फ़रज़नलजुनस हिराबाद और पंथाल पैलेजस बेगलुपुर के बीच एलिमिनेटर की विजेत टीम से मिडेजी और इस मुक़ाबले को जीतने वाली टीम 10 नवम्बर को होने वाले फ़रज़नल में मुंबई से टक्कर लेगी। रोहित ने मैच के बाद कहा, मुझे लगता है कि हार सबसे अच्छा प्रदर्शन रहा। किटन डी कॉर्क और सूर्यकुमार यादव ने मेरे जल्द आउट होने के बाद थानदार बल्लेबाजी की। हमारे लिए परिणाम बहुत अच्छा रहा। फ़रज़नल नेन में कोई योजना नहीं थी। हम एक अलग टीम हैं और हम अलग तरह से खेलते हैं। हम चाहते थे कि टीम पावरप्ले में बहुत अच्छा प्रदर्शन टक्कर मैच अपने स्थान में कर ले। उन्होंने कहा, ईशान किशन बहुत अच्छे फॉर्म में हैं और हम बस प्रती चाहते हैं कि वह सकरात्मक लेकर खेलें। हमने वरुणाल से सकरात्मक प्रदर्शन करके बल्लेबाजी करने और गेंदबाजी को दबाते रखने के लिए कहा था।



मोपाल । मध्यप्रदेश राज्य चतुस्रसवारी आकादमी के खिलाडी राजू सिंह भैरौया के खिलाडी टीम का प्रतिनिधित्व करेगे। आधिकारिक जानकारी के अनुसार दिव्ने के अगोले नलब में आयोजित प्रदर्श आदि वलडे डेसाज चैलेन्ज 2020 में भैरौया ने उल्कृष्ट प्रदर्शन कर सवाधिक अक बढेगे और स्वर्ण पदक मप्र को दिलाया। भैरौया ने यह पदक हालीकन अश्व पर शानदार प्रदर्शन करते हुवे मप्र स्थूथ क्लास व्यक्तीगत स्पर्शा में जीतल किया। राजू सिंह टीम के अकला में भारतीय चतुस्र सवारी में चरयनित होने वाले मप्र के एकमात्र खिलाडी है। इसी तरह आकादमी की प्रतीभावान खिलाडी परिधि जोशी ने सीनियर वर्ग की व्यक्तीगत स्पर्शा

में सिविला अश्व पर प्रदर्शन कर मप्र को स्वर्ण पदक दिलाया जबकि अकादमी के खिलाड़ी भोलू परमार ने रॉकटर अश्व पर शानदार प्रदर्शन कर यूथ क्लास में मप्र को रजत पदक दिलाया। वर्ल्ड ड्रेसाज के क्वालीफिकेशन ट्रायल में अकादमी के छह खिलाड़ियों ने भागीदारी की। इनमें फराज खान, सुदीप्ति हजेला, परिधि जोशी, राजू सिंह भदौरिया, भोलू परमार व अर्जुन सिंह शामिल थे।

मुरैना। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर अनुराग वर्मा ने नियुक्त सामान्य तीनों प्रेक्षकों के लिये लाइजिंग ऑफीसर नियुक्त किये हैं। नियुक्त लाइजिंग ऑफीसरों में सुमावली के लिये सामान्य प्रेक्षक गोविन्द के लिये डीपीसी मुरैना मुन्ना सिंह तोमर को नियुक्त किया है।

संपादकीय

स्कूल खोलने में जल्दबाजी न हो

भारत में कोरोना वायरस के कहर के चलते पिछले 8 माह से सभी शैक्षणिक संस्थान बंद है। आनलॉक होने के बाद अब शैक्षणिक संस्थानों को खोलने की इजाजत केन्द्र सरकार ने संबंधित राज्य सरकारों को दे दी है। वे अपने प्रदेशों में कोरोना की स्थिति को देखकर शैक्षणिक गतिविधियां जारी कर सकते है। कुछ राज्यों में शैक्षणिक संस्थानों को प्रारंभ करने की कवायद तेज कर दी है। किन्तु इसके विपरीत परिणाम सामने आ रहे है। आंध्र प्रदेश में 9वीं, 10वीं और 11वीं को कक्षाएं शुरू करते ही वहा के एक स्कूल में 500 से ज्यादा छात्र और 100 से अधिक शिक्षक कोरोना पॉजीटिव पाए गए, नतीजतन स्कूल फिर बंद करना पड़ा। दरअसल नींजि शिक्षण संस्थान सरकार पर स्कूल कालेज खोलने का दबाव बना रहे है क्यों कि लंबे समय से शैक्षणिक संस्थानों के बंद रहने से उन्हे लाखों का नुकसान हो रहा है और उनके लिए शिक्षको को वेतन दे पाना भी मुश्किल हो रहा है। यद्यपि ऑनलाईन क्लास चल रही है लेकिन नीजी शिक्षण संस्थानों को पूरी फीस देने से विद्यार्थियों के अभिभावक अनाकानी कर रहे है। यही वजह है कि निजी शिक्षण संस्थानों के संचालक चाहते है कि जल्द से जल्द स्कूल खुले। कोरोना काल में स्कूलों कालेजों के लिए केन्द्रिय स्वास्थ्य मंत्रालय ने गाईड लाईन भी जारी की है जिसके मुताबिक कक्षा में छात्रों को मास्क लगाकर जाना अनिवार्य रहेगा और छात्रों के बीच क्लास में दो गज की दूरी बनाकर रखनी होगी। स्कूलों के वाहनों में भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना होगा। निजी शिक्षण संस्थान इस गाईड लाईन के पालन करने का भरोसा जरूर दिला रहे है लेकिन इसका पालन कर पालन व्यवहारिक दृष्टि से असंभव ही नजर आता है। खासतौर पर छोट बच्चों से यह उम्मीद की ही नहीं जा सकती की वे स्कूल में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर पाएंगे। पांच घंटे तक मास्क लगाकर पढ़ाई करना भी बच्चों के लिए मुश्किल ही होगा। बेहतर होगा कि कोरोना का कहर थमने तक शैक्षणिक संस्थानों को बंद ही रखा जाएं और ऑनलाईन पढ़ाई कराई जाएं। अरअसल विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार कोरोना काल में स्कूल बंद रहने से भारत को 40 अरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान हो सकत है। इस नुकसान को देखते हुए ही कुछ राज्यों में शैक्षणिक गतिविधियां शुरू करने का जोखिम उठाया जा रहा है जो कतई उचित नहीं है। कोरोना वायरस से संक्रमण की रफ्तार भले ही थोड़ी धीमी पड़ी है लेकिन अभी भी इसका खतरा टलना नहीं है और ठंड के मौसम में कोरोना वायरस का प्रसार और ज्यादा होना की संभावना जताई जा रही है। ऐसी स्थिति में शैक्षणिक संस्थानों को शुरू करना मुनासिब नहीं है।

विचार

अमेरिकी वोटर का मन

अमेरिका में भय और आशंका का जैसा माहौल देखा जा रहा है, वैसा हालिया इतिहास के किसी चुनाव में नहीं देखा गया। न सिर्फ वाइट हाउस की सुरक्षा बढ़ाई गई है, बल्कि तमाम बड़ी दुकानों के बाहर भी इस तरह के इंतजाम किए जा रहे हैं कि दंगाई उन्हें आसानी से निशाना न बना सकें। अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के लिए वोट पड़ने के दूसरे दिन भी मतों की गिनती का काम चल ही रहा है। यह कोई सामान्य स्थिति नहीं है, क्योंकि नतीजे आम तौर पर वोटिंग की रात में ही आ जाते हैं। कंटे की इस टक्कर में अभी तक यह साफनहीं हो सका है कि ऊंट आखिर किस करवट बैठेगा, मगर इन चुनावों को ऐतिहासिक बनाने वाले कारक और भी हैं। राष्ट्रपति ट्रंप चुनाव से पहले ही कह चुके थे कि अगर नतीजे उनके खिलाफ आए तो जरूरी नहीं कि वे उन्हें चुपचाप स्वीकार कर ही लेंगे। मतदाणना के दौरान भी उन्होंने धांधली के आरोप लगाते हुए कोर्ट जाने की धमकी दी है। अमेरिका में भय और आशंका का जैसा माहौल देखा जा रहा है, वैसा हालिया इतिहास के किसी चुनाव में नहीं देखा गया। न सिर्फ वाइट हाउस की सुरक्षा बढ़ाई गई है, बल्कि तमाम बड़ी दुकानों के बाहर भी इस तरह के इंतजाम किए जा रहे हैं कि दंगाई उन्हें आसानी से निशाना न बना सकें। लोगों को डर है कि कहीं ट्रंप समर्थक राइफलें लेकर सड़कों पर न निकल आए। बहरहाल, यह सब अमेरिका के लिए भले नया हो, कई अन्य लोकतंत्रों में ऐसी स्थितियां देखी जाती रही हैं। अभी तक के नतीजों पर गौर करें तो ट्रंप का चुनाव अभियान बहुत मजबूती से संचालित हुआ जान पड़ता है। चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों में डेमोक्रैटिक उम्मीदवार जोसफबाइडन बहुत आगे दिखाए जा रहे थे और उनकी बढ़त का फसला दस फीसदी तक दिखाया जा रहा था। लेकिन जिस तरह की टक्कर दोनों प्रत्याशियों में दिख रही है, उससे लगता है कि अमेरिकी मतदाताओं के बीच ट्रंप की पकड़ कमजोर नहीं हुई है। उनका काम करने का अंदाज, उनके फैसले और बयान अमेरिका के बाहर उनकी छवि चाहे जैसी भी बनाते हों, अमेरिकी समाज का बड़ा हिस्सा इसे सहज रूप में लेता है। इसका मतलब यह भी है कि अमेरिकी समाज की जैसी छवि हमने अपने मन में बना रखी है, वह हकीकत से काफी दूर है। अमेरिका को हम जिन आधुनिक मूल्यों से जोड़कर देखते रहे हैं, उनकी ध्वजियां उड़ते हुए ट्रंप अमेरिकी समाज के एक बड़े हिस्से में मान्य बने रहते हैं तो यह बताता है कि हमें अमेरिकी समाज को देखने-समझने का तरीका बदलना होगा। एक पुरखी यह भी है कि ‘ब्लैक लाइव्स मैटर’ जैसे सघन आंदोलन के बीच हुए इन चुनावों में ट्रंप को मिले अश्वेत वोट पिछले चुनावों की तुलना में दो फीसदी बढ़ गए हैं। उनके लिए सकारात्मक साबित हुए चुनावी कारकों में एक उनकी यह उपलब्धि है कि अमेरिका में बेरोजगारी का स्तर उन्होंने ऐतिहासिक रूप से नीचे ला दिया। दूसरे छोर से देखें तो डेमोक्रैटिक प्रत्याशी जोसफबाइडन के व्यक्तित्व में अलग से कोई चमकीली बात भले न चिह्नित की जा सके, पर मुद्दों की ताकत शुरू से उनके साथ रही है।

पाठकों की बात

सोलह श्रृंगार कर

सोलह श्रृंगार कर चन्द्रमा को देती अर्घ्य।
अमर सुहाग रहे चांद पर दीर्घा।
सोलह श्रृंगार कर मग्नत हैं मांग रही जोड़ी
अमर रहे गौरा कृपा कीजिए।
सुख जो अपार मात बनें रहें पल छिन सदा धन धन्य बड़े शरण में लीजिए।
सबके भंडार भरें अमर सुहाग करें सब नित पूर्ण पलें मात
अब रंझिए।
- **दीपा गुप्ता**

जिन लोगों को

जिन लोगों को अर्णव की भड़काऊ पत्रकारिता पसंद नहीं वो अर्णव के खिलाफ की गई भड़काऊ कार्रवाई से बड़े खुश हैं..... जिन्हें अर्णव की पत्रकारिता का अतिवाद पसंद नहीं उन्हें महाराष्ट्र सरकार के अतिवाद से कोई दिक्कत नहीं! जिन्हें एनडीवी पर लगे एक दिन के बैन में लोकतंत्र की हत्या दिखाई दे रही थी उन्हें अर्णव को घसीटकर ले जाए जाने में लोकतंत्र का पुनर्जन्म दिखाई दे रहा है !

- **रितेश सोनार**

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

.खास पाती. | पत्रकार भी होते हैं खूब अज़ब....!



पत्रकार भी होते हैं खूब अज़ब
स्याही सूख नहीं पाती
खबर देते हैं खूब गजब।
बेचारे कितने नानाद होतें हैं उनके
भी दिल में बहोत सारे अरमान होतें हैं।
निकालते हैं हर जुल्म का निदान देते हैं सबको विश्वास का अन्नपान।
उनका भी एक उशूल होता है
फिर चाहे पुलिस हो या देश का नेता
ये उनसे भी बड़े त्रिसूल होते हैं।
पत्रकार भी होते हैं खूब अज़ब
स्याही सूख नहीं पाती
खबर आ जाती है खूब अज़ब।
डर तो उनको भी लगता है
पर जान हथेली पर ले के चलते हैं।
लेकिन ख़बर सच्ची और पक्की दिखा के रहते हैं।
दुश्मनों से बहोत घिरे होतें हैं परवाह नहीं देखो
दुनियां बालों सभी पत्रकार लापरवाह नहीं।
घर परिवार का कोई परवाह नहीं ख़बर जैसी भी हो
दिखाने में लापरवाह नहीं।
पत्रकार भी होते हैं खूब अज़ब
स्याही सूख नहीं पाती
खबर आ जाती है खूब अज़ब।
उनका भी एक परिवार होता है
उनके भी छोटे-बड़े रिस्तेदार होतें हैं।
जब दफ़्तर से आधी रात निकलते हैं तो पत्रव्यवहार और पत्रपाली बना कर चलते हैं।
पत्रकार भी होते हैं खूब अज़ब
स्याही सूख नहीं पाती
खबर आ जाती है खूब गजब।।।
पत्रकार भी होते हैं खूब अज़ब।

रात थी आधी मगर , चांद चलता

रात थी आधी मगर , चाँद चलता ही रहा ,
चराग मंद-मंद जले ,मोम पिघलता ही रहा
नैनों में ख़्वाब भी आधे अधूरे ही थे
मगर , ज़िंदगी चलती रही ,
रक्त भी गुज़रता रहा ।।
रात इक वक्त पर ढल कर सहर हो जायेगा ,
आज चाँद छुप गया कल फिर फलक पर आयेगा
वक्त मगर आता नहीं
पल पल गुज़र कर कभी ,
इंसान भी चला गया जो लौट कर न आयेगा ।।
रहता है ज़माने मे सिर्फ़कर्म जो कोई कर गया ,
अच्छ किया बुरा किया जो भी किया रह गया
ज़िंदगी इक बार मिलती है
बस जीने के लिये
तभी तो ज़ानी कह गये ,
न मिलेगी जींदगी दोबारा।- **श्रीक्षा लाहीरी**

योगेश कुमार गोयल

अगर शरीर में कैसर होने के कारणों की बात की जाए तो हालांकि इसके कई तरह के कारण हो सकते हैं लेकिन अवसर जो प्रमुख कारण माने जाते रहे हैं, उनमें मोटापा, शारीरिक सक्रियता का अभाव, व्यायाम न करना, ज्यादा मात्रा में अल्कोहल व नशीले पदार्थों का सेवन, पौष्टिक आहार की कमी इत्यादि इन कारणों में शामिल हो सकते हैं। कभी-कभार ऐसा भी होता है कि कैसर के कोई भी लक्षण नजर नहीं आते किन्तु किसी अन्य बीमारी के इलाज के दौरान कोई जांच कराते वक्त अपानक पता चलता है कि मरीज को कैसर है लेकिन फिर भी कई ऐसे लक्षण हैं, जिनके जरिये अधिकांश व्यक्ति कैसर की शुरूआती स्टेज में ही पहचान कर सकते हैं। कैसर के लक्षणों में कुछ प्रमुख हैं, वजन घटते जाना, रक्त की कमी होना, निरंतर बुखार बने रहना, शारीरिक थकान व कमजोरी, चक्कर आना, उल्टी होना, दौरे पड़ना शुरू होना, आवाज में बदलाव आना, सांस लेने में दिक्कत होना, खाली के दौरान खून खूना आना, लंबे समय तक कफरहना और कफ़के साथ न्युकस आना, कुछ भी निगलने में दिक्कत होना, पेशाब और शौच के समय खून आना, शरीर के किसी भी हिस्से में गांठ या सूजन होना, माहवारी के दौरान अधिक साव होना इत्यादि।



डॉ. श्रीनाथ सहय

वैश्विक आतंकवाद का गुकाबला वैश्विक सामूहिक प्रयासों से ही हो सकती है। जून 2019 को किर्गिस्तान की राजधानी में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन यानी एससीओ शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी सदस्य देशों को संबोधित करते पाकिस्तान का नाम लिए बिन उसे आतंकवाद के गुंथे पट घेरा और इमरान खान को कड़ा संदेश दिया था। उन्होंने कहा कि, “पिछले दिनों श्रीलंका दौरे पर मुझे आतंकवाद के विरोधो वेस्टे का स्वागत हुआ। वह आतंक जो कहीं भी प्रवृत् होकर मासूमों की जान ले लेता है। इस खतरे से निपटने के लिए सभी मानवतावादी ताकतों को अपने संकीर्ण दायरे से निकलकर एकजुट हो जाना चाहिए।”

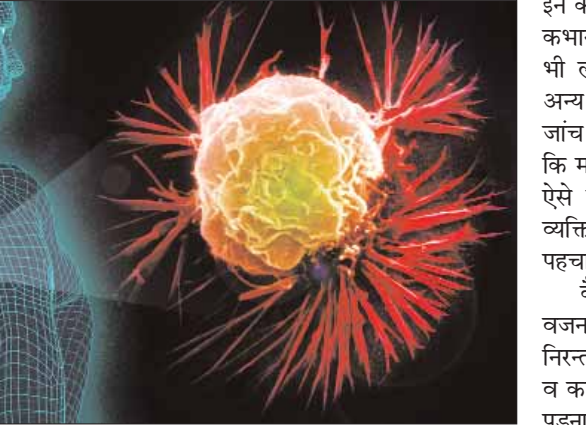
राष्ट्रीय कैसर जागरूकता दिवस पर विशेष

कैसर नहीं है पूरी तरह लाइलाज

भारत में कैसर के करीब दो तिहाई मामलों का बहुत देर से पता चलता है और कई बार तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसीलिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा लोगों को कैसर होने के संभावित कारणों के प्रति जागरूक करने, प्राथमिक स्तर पर कैसर की पहचान करने और इसके शीघ्र निदान तथा रोकथाम के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 7 नवम्बर को ‘राष्ट्रीय कैसर जागरूकता दिवस’ मनाया जाता है। वास्तव में यह महज एक दिवस भर नहीं है बल्कि कैसर से लड़ रहे उन तमाम लोगों में नई चेतना का संचार करने और नई उम्मीद पैदा करने का दिवस है। इस अवसर पर ऐसे लोगों का उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है, जिन्होंने अपने जज्जे और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की बदौलत कभी लाइलाज मानी जाने वाली इस बीमारी पर विजय प्राप्त की और वर्षों से स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। दरअसल आज भी लगभग सभी लोगों के लिए कैसर एक ऐसा शब्द है, जिसे अपने किसी परिजन के लिए डॉक्टर के मुंह से सुनते ही परिवार के तमाम सदस्यों की सांस गले में अटक जाती है और पैरों तले की जमीन खिसक जाती है। ऐसे में परिजनों को परिवार के उस अभिन्न अंग को सदा के लिए खो देने का डर सताने लगता है। बढ़ते प्रदूषण तथा पोषक खानपान के अभाव में यह बीमारी एक महामारी के रूप में तेजी से फैल रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि हमारे देश में पिछले बीस वर्षों के दौरान कैसर मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है। प्रतिवर्ष कैसर से पीड़ित लाखों मरीज मौत के मुंह में समा जाते हैं।

हालांकि कुछ वर्ष पूर्व तक कैसर को लाइलाज रोग माना जाता था लेकिन कुछ वर्षों में कैसर के उपचार की दिशा में क्रांतिकारी खोजें हुई हैं और अब अगर समय रहते कैसर की पहचान कर ली जाए

तो उसका उपचार किया जाना काफी हद तक संभव हो जाता है। कैसर के संबंध में यह समझ लेना बेहद जरूरी है कि यह बीमारी किसी भी उम्र में किसी को भी हो सकती है किन्तु अगर इसका सही समय पर पता लग जाए तो लाइलाज मानी जाने वाली



इस बीमारी का अब उपचार संभव है। यही वजह है कि देश में कैसर के मामलों को कम करने के लिए कैसर तथा उसके कारणों के प्रति लोगों को जागरूक किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है ताकि वे इस बीमारी, इसके लक्षणों और इसके भयावह खतरों के प्रति जागरूक रहें। कैसर से लड़ने का सबसे बेहतर और मजबूत तरीका यही है कि लोगों में इसके प्रति जागरूकता हो, जिसके चलते जल्द से जल्द इस बीमारी की पहचान हो सके और शुरूआती चरण में ही इसका इलाज संभव हो। यदि कैसर का पता शीघ्र लगा लिया जाए तो उसके उपचार पर होने वाला खर्च काफी कम हो जाता है। यही वजह है कि जागरूकता के जरिये इस बीमारी को शुरूआती दौर में ही पहचान लेना बेहद जरूरी माना गया है क्योंकि ऐसे मरीजों के इलाज का शुरूआती चरणों में तो सफल इलाज संभव भी है। अगर शरीर में कैसर होने के कारणों की बात की जाए तो

हालांकि इसके कई तरह के कारण हो सकते हैं लेकिन अवसर जो प्रमुख कारण माने जाते रहे हैं, उनमें मोटापा, शारीरिक सक्रियता का अभाव, व्यायाम न करना, ज्यादा मात्रा में अल्कोहल व नशीले पदार्थों का सेवन, पौष्टिक आहार की कमी इत्यादि इन कारणों में शामिल हो सकते हैं। कभी-कभार ऐसा भी होता है कि कैसर के कोई भी लक्षण नजर नहीं आते किन्तु किसी अन्य बीमारी के इलाज के दौरान कोई जांच कराते वक्त अचानक पता चलता है कि मरीज को कैसर है लेकिन फिर भी कई ऐसे लक्षण हैं, जिनके जरिये अधिकांश व्यक्ति कैसर की शुरूआती स्टेज में ही पहचान कर सकते हैं।

कैसर के लक्षणों में कुछ प्रमुख हैं, वजन घटते जाना, रक्त की कमी होना, निरन्तर बुखार बने रहना, शारीरिक थकान व कमजोरी, चक्कर आना, उल्टी होना, दौरे पड़ना शुरू होना, आवाज में बदलाव आना, सांस लेने में दिक्कत होना, खांसी के दौरान खून आना, लंबे समय तक कफ रहना और कफके साथ म्यूकस आना, कुछ भी निगलने में दिक्कत होना, पेशाब और शौच के समय खून आना, शरीर के किसी भी हिस्से में गांठ या सूजन होना, माहवारी के दौरान अधिक साव होना इत्यादि। कीमोथैरेपी, रेडिएशन थैरेपी, बायोर्लोांजिकल थैरेपी, स्टेम सेल ट्रांसप्लांट इत्यादि के जरिये कैसर का इलाज होता है किन्तु यह सारा- इतना सहना होता है कि एक गरीब व्यक्ति इतना खर्च उठाने में संक्षम नहीं होता। इसलिए जरूरत इस बात की महसूस का जाती रही है कि कैसर के सभी मरीजों का इलाज सरकारी अस्पतालों में हो या निजी अस्पतालों में, सरकार ऐसे मरीजों के इलाज में यथासंभव सहयोग करे क्योंकि जिस तेजी से देश में कैसर मरीजों की संख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए केवल सरकारी अस्पतालों के भरोसे कैसर मरीजों के इलाज की कल्पना बेमानी ही होगी।

आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होने का वक्त

आतंकवाद मानवता और विश्व के लिए सबसे गंभीर खतरा है। आतंकवाद विश्व के सामने लगातार जारी और नए-नए रूप लेती भयावह समस्या है। लिहाजा विश्व के उन तमाम देशों को जो इस समस्या से पीड़ित है, उनको इसके खिलाफ एकजुट होने की जरूरत है। भारत तो पिछले काफी लंबे समय से आतंकवाद का दंश झेल रहा है। पाक प्रायोजित आतंकी देश का माहौल खराब करना चाहते हैं, लेकिन वो तो गंभीरत है कि पिछले छह वर्षों से मोदी सरकार के डर के चलते पाकिस्तान से भेजे गये आतंकी भारत की शान्ति भंग करने में सफल नहीं हो पाये हैं। आतंकवाद की समस्या तेजी से बढ़ रही है। आतंकवाद लिंग, सीमा, धर्म का कोई भेद नहीं करता। आतंकवाद ऐसी बुराई है जो वैश्विक शांति, स्थिरता एवं प्रगति के मार्ग में बड़ी बाधा बन गया है। कोई देश इससे बचा नहीं है। आतंकवादी गुटों का एजेंडा, अधिनायकवाद, महिलाओं के प्रति द्वेष और असहिष्णुता का है। इनसे संयुक्त राष्ट्र चार्टर और मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा में निहित साझे मूल्यों को चोट पहुंचती है।

भारत के लिए आतंकवाद का दंश और उससे जुड़ी पीड़ा, यंत्रणाएं तीन दशक पुरानी हैं। कश्मीर, पंजाब से लेकर पूर्वोत्तर राज्यों तक आतंकवाद और उग्रवाद हमने देखा और झेला है। अब कश्मीर ही सबसे ज्यादा छलनी है। ये दल के इस पूरे दौर में 80,000 से ज्यादा भारतीय मारे जा चुके हैं। इस साल जनवरी में रायसीना डायलॉग कार्यक्रम में बोलते हुए जनरल रावत ने कहा था कि आतंकवाद से निपटने के लिए बेहद कड़ा रुख अपनाने की जरूरत है, उसी तरह जिस तरह 9/11 के अतंकी हमले के बाद अमेरिका ने आतंकवादी समूहों के खिलाफकार्रवाई की था। उन्होंने अपने उद्बोधन में यह चेतावनी भी दी थी कि अगर हमें लगता है कि आतंकवाद

के खिलाफयुद्ध खत्म होने वाला है, तो हम गलत हैं। जनरल रावत ने अप्रत्यक्ष तौर पर पाक पर जमकर निशाना साधा था। अभी पिछले दिनों ही पाकिस्तान के मंत्री ने उन्हीं की संसद में कबूल किया कि कश्मीर में पुलवामा आतंकी हमला



पाकिस्तान ने ही कराया था। अब यह ठोस साक्ष्य दुनिया के सामने मौजूद है। भारत सरकार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भी यह विषय उठाना चाहिए, ताकि लगातार कोशिशों से पाकिस्तान को ‘आतंकी देश’ घोषित कराया जा सके। लेकिन अफसोस इस बात का है कि हमारे देश के कई राजनीतिक दलों की बोली पड़ोसी देश का होसला बढ़ाती है। ये दल अपनी ही सरकार की कार्यवाही को कटघरे में खड़ा करने से बाज नहीं आते हैं। ऐसे मामलों में राजनीति होना ठीक नहीं है।

आतंकवाद कोई सीमा या धर्म को नहीं मानता और भारत लम्बे समय से प्रायोजित आतंकवाद से प्रभावित रहा है। दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका भी आतंकवाद का पीड़ा सह चुका है। ताजा मामला फ्रांस का है, जहां

कट्टरवाद का नंगा नाच सड़कों पर साफ तौर पर सारी दुनिया ने देखा है। यह परकाष्ठा है कि ऐसे विकसित और लोकतांत्रिक देश में काटूट बनाने की सजा हल्य़ा है। भारत में कथित बड़े शापर मुनव्वर राणा ने भी दो टुक कहा है कि कोई मुहम्मद साहब की इज्जत और गरिमा से खिलवाए करेगा, तो भी मैं उसे मार दूँगे, लेकिन नसीरुद्दीन शाह, जावेद अख्तर और शबाना आजमी सरीखे 130 दिगजों ने कट्टरवाद के खिलाफ बयान जारी किया है। वे भी आहत हुए होंगे, लेकिन हर हाथ ने चाकू नहीं उठाया। यह व्रवृति आतंकवाद से भी ज्यादा खतरनाक है। पिछले दिनों फ्रांस के कट्टरवाद के समर्थन में भोपाल, मुंबई, अलीगढ़, बरेली, देवबंद आदि भारतीय इलाकों में भी जो हरकतें की गई हैं, रेलियां आयोजित कर धमकियां दी जा रही हैं और सड़कों पर मित्र-देश फ्रांस के राष्ट्रपति का चित्र लगाकर उसे पैरों से कुचला जा रहा है, जूते मारे जा रहे हैं, तो यह कट्टरवाद हमें कहां ले जाएगा? ये विचारणीय है। आतंकवाद का खतरा किसी भी राष्ट्र की सीमाओं में बंधा नहीं है और उसे कोई भी एक सरकार या संगठन मात नहीं दे सकता। इसके लिए वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर विभिन्न पक्षों को मिलकर प्रयास करना होगा। आतंकवाद का सामना कर सकने वाली संरचनाओं और संस्थाओं को मजबूत करना आवश्यक है। मई 2017 में अपनी पहली विदेश यात्रा में सऊदी अरब पहुंचे अमरीकी राष्ट्रपति डोनेल्ड ट्रंप ने रियाद में 40 से ज्यादा मुस्लिम देशों के नेताओं को संबोधित किया था। ट्रंप ने अपने संबोधन में मुस्लिम देशों के नेताओं से आतंकवाद खत्म करने की अपील की थी। उन्होंने कहा कि अपनी पवित्र धरती पर आतंकवाद को प्रश्रय न दें।

QUIZ TIME

- छत्तीसगढ़ ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष कौन होंगे?
- घोघरा जलप्रपात कहां स्थित है? (कबीरधाम / बालोद / बेमेतरा)
- हाल ही में किस जिले में सफेद भालू देखा गया है?
- सीता लेखनी की पहाड़ी का नामकरण कैसे हुआ? (अक्षर ज्ञान / औषधि ज्ञान / वन्य ज्ञान)
- पूर्व न्यायमूर्ति का नाम बताइए?

उत्तरावली - भागवत (5) कृष्ण (4) अर्जुन (3) कर्ण (2) दुर्योधन (1) भीम - भागवत (5) ज्ञान अक्षर (4) औषध (3) वन्य (2) कृष्ण (1) अर्जुन (4) कर्ण (3) दुर्योधन (2) भीम (1) भागवत (5)

आज का इतिहास

नई दिल्ली ।1858 : अंग्रेजों के खिलाफलड़ने वाले महान क्रांतिकारी बिपिन चंद्र पाल का जन्म 7 नवंबर को हुआ था। 1862 : मुगल साम्राज्य के अंतिम बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र का निधन । 1876 : बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने बंगाल के एक गांव में वन्दे मातरम् गीत की रचना की थी। 1888 : प्रसिद्ध वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकट रामन का जन्म। 1893 : कोलोराडो महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया गया। 1917 : रूस में सफ़्त बोल्शेविक क्रांति। 1982 : तुर्की में संविधान अंगीकार किया गया। 1998 : दुनिया

का सबसे बुजुर्ग जॉन ग्लेन नाम का अंतरिक्षयात्री सुरक्षित धरती पर वापस लौटा। 1998 : अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत और पाकिस्तान पर लगे प्रतिबंधों में ढील देने की घोषणा की। 2000 : अमेरिकी राष्ट्रपति पद हेतु मतदान संपन्न। 2003 : अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने गर्भपात पर रोक सम्बन्धी विधेयक पर हस्ताक्षर किया। 2012 : ग्वाटेमाला में भूकंप से 52 की मौत हुई। 2015 : भारतीय निर्देशक और कवि बप्पादित्य बंदोपाध्याय का निधन।

हंग से खाद वितरण करवाने की व्यवस्था पर दोनों का आधार माना है इस निरीक्षण में मधुसूदनगढ़ और आई, कुचर श्याम सिंह एवं मधुसूदनगढ़ पटवाली राकेश यादव साथ रहे।

चीन एवं विदेशी पटाखों का परिवहन, भण्डारण एवं विक्रय पूर्णतः प्रतिबंधित

पन्ना। चीनी एवं अन्य विदेशी पटाखों का आयात बिना लायसेंस पूर्णतः वर्जित है। डायरेक्टर जनरल फॉरेन ट्रेड (वक़्त) द्वारा चीनी अथवा विदेशी पटाखों का आयात के लिये कोई लायसेंस भी जारी नहीं किये गये हैं।

छह दिन पहले जान से मारने की धमकी मिली थी। शर्मा ने भोपाल में कांग्रेस विधायक द्वारा मसूद व अल्पसंख्यक समुदाय अफा फ्रांस के राष्ट्रपति के खिलाफ प्रदर्शन करने पर कहा था कि विरोध प्रदर्शन फ्रांस में करें। यहाँ भोपाल, मग्न या भारत में करने का क्या औचित्य है। मेरे इस बयान के बाद मुझे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व फोन पर अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों ने जान से मारने की धमकी दी।

दादा ने कार्डर्सलिंग में कहा कि उनके बेटे की दो साल पहले मौत हो गई और उसकी जिम्मेदारता बहू है। अब वह उसे की इकलौती संतान को अपने परिवार के संरक्षण में रखना चाहते हैं। उनके बेटे की भी यही इच्छा थी। यही कारण है कि वे बहू को साथ रखना नहीं चाहते। बहू ने कहा कि उसे भी परिवार का संरक्षण चाहिए, जबकि दादा का कहना है कि उनके बेटे की मौत का कारण उनकी बहू है। वहीं बहू ने कहा कि पति का व्यवसाय में घाटा होने के कारण वे डिप्रेशन में चले गए थे। इस कारण उनकी मौत हुई। इसका दुख सभी है। बच्ची को दादा के साथ भेजने पर बोली, वह उसे ददा-दादी से मिलवा सकती है,

नगर निगम के वर्कशॉप की भी स्थिति खराब है। वर्कशॉप में प्रतिदिन औसतन 45 से 55 वाहन मरम्मत के लिए आते हैं। ज्यादा मरम्मत के वाहनों व पेइंग वर्क को मिलाकर 70 से अधिक गाड़ियां यहां सुधार के लिए पड़ी हुई हैं। वर्कशॉप में महज 25 मैकेनिक व 25 कर्मी हैं। अधिकारियों की मानें तो वर्कशॉप में करीब 100 प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी है। ऐसे में सुधार कार्य भी जल्द नहीं हो पा रहा है।